DR. SUMAN LAL RAY
Assistant Professor
Deptt. of Samskrit,
S.R.A.P. college,
Bara chakia

B.A. (Hons.), Part — II
Subject — Samskrit
Paper — IV

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (द्वितीयोऽङ्कः)

श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद

श्लोक सं० - 6

गाहन्तां महिषा निपानसलिलं शृङ्गैर्मुहुस्ताडितं
छायाबद्धकदम्बकं मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु ।
विस्रब्धं क्रियतां वराहपतिभिर्मुस्ताक्षतिः पल्वले
विश्रामं लभतामिदं च शिथिलज्याबन्धमस्मद्धनुः ॥

अन्वयः

महिषाः शृङ्गैः मुहुः ताडितं निपानसलिलं गाहन्तां मृगकुलं छायाबद्धकदम्बकं सत् रोमन्थम् अभ्यस्यतु वराहपतिभिः विस्रब्धं पल्वले मुस्ताक्षतिः क्रियताम् इदम् अस्मद्धनुः च शिथिल-ज्याबन्धं सत् विश्रामं लभताम् ।

अनुवाद

वनैले भैंसे अपने सींगों से बार-बार जल का ताड़न करते हुए पास के जलाशयों में निर्भय होकर जलक्रीड़ा करें। हरिण वृक्षों की सघन छाया में बैठकर सुखपूर्वक जुगाली का अभ्यास करें। बड़े-बड़े जंगली सुअर छोटे-छोटे गड्ढों में नागरमोथा की जड़ों को खोद-खोदकर खायें और प्रत्यंचा ढीला किया हुआ धनुष भी विश्राम करे।

— 0 —

Scanned by TapScanner